अध्याय पंचम

उपसंहार:-

किसी भी समाज के विकास की बात हो, विकास करते समय तीन मूल बातों को ध्यान में रखना बहुत ही जरूरी होता है एवं उन तीन सवालों की पूर्ति करते हुये विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना या विकास करना जरूरी होता हैं। विकास की बात करते वक्त यह सोचना और विचार करना जरूरी होता हैं की

(1) विकास कैसा हो?

(2) किस किमत पर किसके लिए?

(3) किसके द्वारा हो?

आज अगर देखा जाये तो आजाद भारत को विकास की जरूरत हैं। विकास हर समाज हर व्यक्ति किसी भी हालत में चाहता हैं। लेकिन विकास के नाम पर जो लोगों को विस्थापित किया जा रहा हैं या विकास के नाम पर लोगों की जमीने, लोगों के संसाधनों को एक पूंजीपति वर्ग जो 10% हैं अपने स्वार्थ के प्रति 90% लोगों को सरकार की मदद से अनेक प्रकार से प्रभावित कर रहा हैं। ज़मीनें, उनके जंगल उनके, जीवन के गुजर-बसर करने के साधनों को देश के विकास का नाम देकर हड़प लिए जा रहा है। किसानों, आदिवासियों, मजदूरों को विस्थापित किया जा रहा हैं। उन पर विचार करना बहुत ही जरूरी है।

विकास बहुत ही जरूरी होता हैं, विकास होना भी चाहिए लेकिन विकास के नाम पर जो विस्थापन किया जा रहा हैं वह और विकास का तरीका गलत हैं जिससे समाज में बहुत ही बड़ी

मात्रा में असंतोष दिखाई दे रहा हैं। भारत एक कृषि प्रधान देश हैं। भारत में सबसे ज्यादा लोग ग्रामीण क्षेत्र में निवास करते हैं। आजादी के इतने सालों के बाद भी भारत के ग्रामीण क्षेत्र तक आज भी विकास नहीं पहुँच पाया हैं। लोग विकास का विरोध नहीं कर रहे हैं। लोग तो विकास चाहते हैं लेकिन विकास के नाम पर जो शोषण हो रहा हैं ,विकास करने के जो तरीके हैं उनका विरोध लोग कर रहे हैं। उसकी ओर सरकार ध्यान ही नहीं दे रही हैं। आज अगर देखा जाये तो विकास के नाम पर बड़े-बड़े पूंजीपति, उद्योगपति लोग अपनी बड़ी-बड़ी कंपनीया लगा रहे हैं। उन कंपनीयों के लिए बड़ी मात्रा में जमीन की आवश्यकता होती हैं। उस आवश्यकता की पूर्ति के लिए किसानों से ज़मीनें खरीद रहे हैं। उस खेती के बदले में उन्हें सही मुआवजा भी नहीं दिया जा रहा हैं। उन कंपनीयों के कारण विस्थापन के बदले में खेती या रहने के लिए प्रदूषण मुक्त स्थाई जगह की भी व्यवस्था नहीं की जा रही हैं। उससे किसानों, आदिवासियों एवं मजदूरोंको अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

विकास और प्रगति के नाम पर आज समाज से एक प्रकार की शांति छीन ली जा रही हैं। आर्थिक विकास एवं औद्योगीकरण की वजह से जिन अलग-अलग विचारों को सामने लाकर खड़ा किया हैं। उनसे पर्यावरणीय एवं सामाजिक लागतों की अनदेखी की हैं। आज अगर देखा जाए तो विकास के नाम से एक बहुत बड़ा तबका असंतोष एवं निराश दिखाई दे रहा हैं। विकास के नाम पर सरकार एवं पूंजीपतियों द्वारा चलाई जा रही बड़ी-बड़ी परियोजनाओं से बड़ी मात्रा में विस्थापन हो रहा हैं। दिन-प्रति-दिन विस्थापन की संख्या बढ़ती जा रही हैं। उन विस्थापित परिवारों को अपना सबकुछ छोड़कर अपने जीवन का और अपने परिवार का पालन पोषण करनेवाला साधन उन से छिन लिया जा रहा हैं। उन्हें बेसहारा एवं बेरोजगार बना रहे हैं। विस्थापन के कारण उन पीड़ित परिवारों में अनेकों समस्याएँ निर्माण हो रही हैं। विस्थापन की वजह से अनेक अपराधो

को भी जन्म दिया जा रहा हैं। जैसे की –डकैती, बाल अपराध, ख़ुम चोरी, और दूसरी तरफ अत्महत्या, वेश्यावृत्ति, बेरोजगारी, बाल मजदूर, जैसे अनेक समस्याओं का सामना इन गरीब विस्थापित लिगों को करना पड़ रहा हैं।

मूल बात यह है की लोकतन्त्र में विकास का अर्थ क्या हैं? किसके लिए विकास? और विकास किसके हक में ? यह प्रश्न हम सबके सामने उभरकर खड़ा हैं। आज हम सबको पता हैं की, विकास के नाम पर क्या हो रहा हैं। इस विकास को अगर देखा जाये तो केवल एक ही वर्ग का विकास हो रहा हैं। देश में अमीरों की संख्या बडी हैं तो गरीबी भी बड़ी हैं। विकास का आसमान रूप और भी भयानक होता नजर आ रहा हैं। यह कैसा विकास हैं। कहा जा रहा हैं की 90% लोग विकास का लाभ ले रहे हैं। और 90% लोग केवल 10% हिस्सा पाने में मजबूर दिखाई दे रहे हैं। उसके लिए सरकार जिम्मेदार हैं। अगर हम उन किसानों, आदिवासियों मज़दूरों की बात करे तो वे लोग कतई विकास का विरोध नहीं कर रहे हैं। वो भी चाहते हैं की विकास हो उनका भी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास हो, लेकिन जो विकास करने का तरीका विकास के नाम पर जो विस्थापन हो रहा उसके लिए व्यवस्था की जानी चाहिए जिसके कारण उन्हें बेसहाय्य होकर नहीं जीना पड़े। विस्थापितों को सही मुआवजा मिले, उनके लिए विस्थापन के बदले में अगर चाहते हैं तो जमीन के बदले जानी एवं घरों की व्यवस्था होनि चाहिए। इस पर सरकार को विचार करना चाहिए।

विस्थापितों के आंकड़ों पर अगर नजर डाले तो हमे पता चलता हैं की, जो योजनाएँ, बड़ी-बड़ी परियोजनाए चलाई जा रही हैं उन परियोजनाओं से अधिकांश लोग विस्थापित हो गए हैं। अधिकांश विस्थापित लोग मजलूम एवं बेसहारा बने हुये नजर आते हैं। उनमे से ज्यादा तर विस्थापित लोगों की संख्या जनजातीय समाजेव्म ग्रामीण किसानों की पायी गई हैं। यह लोग

सदियों से प्राकृतिक संसाधनों पर आश्रित थे और उन्ही पर उनकि गुजर बसर आधारित थी। परिणाम स्पष्ट हैं कि-हमारे सरकार एवं पूँजीपतियों,उद्योगपतियों की विकास की नीतियों और उनके फलस्वरूप होने वाले विस्थापन में जंजातियों एवं ग्रामीण किसानों का अनुपात अधिक हैं। इस तथ्य को अनुसूचित जनजातियों के कमिशनर और आंठवी योजना के दौरान अनुसूचित जाती के कल्याण कार्य मे मेक कार्यकारी समूह की रिपोर्ट ने प्रमाणित भी किया हैं।

इस विस्थापन की वजह से बडी मात्रा में समस्याओं को सह रहे किसानों, आदिवासियों, मजदूरों के अनेक उदाहरण है –इसमे महाराष्ट्र के छोटा नागपुर के जनजातीय क्षेत्र में नेतरहट पाइलट प्रोजेक्ट टेस्ट फाइरिंग रेंज यह परियोजना गुमला एवं पालामऊ के जिले मे कार्यान्वित की जानेवाली थी। और उससे लग-भाग (3) तीन लाख लोग विस्थापन होने वाला थे। जनजातियों के विरोध से अभी फिलहाल तो यह योजना लंबित हैं। उसके बाद नर्मदा बांध यह भी बड़ा ही चर्चा में रहा हैं। इससे भी बहुत बड़ा तबका विस्थापित होगा। वहाँ के स्थानिको ने विरोध किया हैं इस आंदोलन ने तो अंतरराष्ट्रीय दर्जा पा लिया हैं। आंध्र प्रदेश का पालावरम बांध भी लगभगलगभग (3) तीन लाख लोगों का विस्थापन करेगा। जिसमें सबसे अधिक जनसंख्या जनजातीय लोगों की हैं। उड़ीसा में भी इसी प्रकार का एक आंदोलन 'गन्धमर्दन बॉक्साइड ' की खानों और 'चिलिका' परियोजना के विरोध में हुआ था। इसी प्रकार से भारत में अनेक प्रकार के विस्थापित लोगों एवं जनता में विकास के नाम पर दिन-व-दिन असंतोष बढ़ता जा रहा हैं। इसी लिए विकास के नाम पर जो विस्थापन हो रहा हैं उस विकास कारी योजनाओं का विरोध एवं उससे असहमति लोग दिखा रहे हैं। और अनेक उदाहरण हमे देखने को मिलते हैं – जैसा की किसी जनजाति या किसानों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थापित किया जाता हैं और लोग अपने एक विस्थापन की पीड़ा को भूले भी नहीं तो तो उन्हें वहाँ से भी उखाड़ फेंका गया। यह उदाहरण उत्तर प्रदेश में सिंगरोली में

और मेंगलोर पत्तन के निकट सेंट्रल कोलफील्ड तथा नेशनल सुपर थारमल पावर के नाम पर 146 गाँव के परिवार बेघर हुये थे। आजादी के बाद कच्चा माल तथा विद्युत सिंचाई की विस्तृत परियोजनाओं में उन प्राकृतिक संपदाओं का प्रयोग किया गया। जिसमे 'राऊरकेला, भिलाई, बैलाडिला, तथा हीराकुंड' परियोजनाए इसका उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

इसी तरह से अनेक उदाहरण हमें देखनेको मिलते हैं जिस में महाराष्ट्र मे स्थित तारापुर परमाणु पावर प्लांट हैं। उससे पूरे गाँव के लोगों का बड़ी ही निर्दयी तारीके से विस्थापन किया गया हैं। इस बांध के जरिये वहाँ के लोग मछलियों का व्यवसाय करते थे। उन्हें वहां से उखाड़ दिया गया और उस बांध में गरम तथा दूषित गंदा पानी छोड़ा जा रहा हैं इसी कारण उस बांध में जो भी मछलिया या जो भी जीव हैं वह खत्म हो रहे हैं। इससे यह ग्यात होता हैं कि विकास के नाम पर जो भी योजनाए परियोजनाए चलाई जा रही हैं वे समाज के विकास या समाज के विकास के लिए नहीं तो वे एक वर्ग जो पूंजीपति वर्ग के विकास के लिए स्वार्थ के भाव से किया जा रहा हैं। इसी वजह से औद्योगीकरण से समाज में अशांति बढ़ती दिखाई दे रही हैं। विकासकारी नीतियाँ ही ऐसे बनाने चाहिए जिससे सभी का विकास हो अगर विस्थापन भी हो रहा है तो उन्हें उसका विकास हो सही मुआवजा मिले और जहां भी स्थापित कर रहे हैं वहाँ से भी उन्हें फिर से न हटाने की गरांटी मिलनी चाहिए।

जनजातियों, किसानों या विस्थापन से पीड़ित लोगों का आर्थिक उत्थान उन विकासकारी परियोजनाओं का तर्कसंगत होना चाहिए ऐसा नहीं हो रहा हैं। अगर किसानों, आदिवासियों की किसी परियोजना में भूमि जाती हैं तो उन्हें बहुत ही कम किमत मिल रही हैं। और अगर देखा जाये तो ज्यादा तर परिवार भूमिहीन हो रहे हैं। कंगाल हो रहे हैं।

इसी तरह से वर्धा जिले में भी लैन्को थर्मल पावर प्लांट का निर्माण कार्य शुरू हैं। इससे भी अनेक किसानों को अपनी जमीनों को खोना पड़ रहा हैं इस पावर प्लांट के लिए 478 हेक्टेयर जमीन खरीदी गै गईं और 150-200 एकड जमीन खरीदनी है। इस पावर प्लांट की वजह से अनेक प्रकार की समस्याओं से लोगों को गुजरना पड़ रहा है। इस प्लांट के लिए जो जमीन खरीदीगई है उसका मुआवजा भी समान नही दिया गया हैं। एवं सरकारी ताकत का इस्तेमाल करके यहाँ पर गैर कानूनी तौर पर कंपनीका काम चल रहा हैं ऐसा पीड़ितों एवं निवासियों से बातचीत करने पर समझ मे आ रहा है। पीड़ितों का विकास के लिए या इस पावर प्लांट के लिए विरोध नहीं हैं तो इस परियोजनाओं के नीतियों एवं उससे निर्माण प्रदूषण, पीड़ितों को सही मुआवजा नहीं दिया जा रहा है, इससे यहाँ के स्थानिकों का असंतोष बढ़ रहा हैं।

विकास तो यहाँ के लोग चाहते हैं ही लेकिन जिस तरह के विकास की जरूरत हैं उस विकास को प्राथमिकता देने की बात ये लोग कहते हैं। वर्धा एवं यवतमाल में बड़ी मात्रा में कपास का उत्पादन होता हैं। तो भी यहाँ के लोगों को कर्जा लेना पड़ता हैं इससे उसके आर्थिक स्थिति और भी दयनीय होती जा रही हैं। यहाँ पर जरूरत हैं काटन पार्क की अगर सरकार को विदर्भ के किसानों का विका अगर सही में करना ही हैं तो सरकार काटन पार्क का विकास करे जिससे किसानों का विकास होगा एवं आर्थिक स्थिति भी सुधरेगी। इस पावर प्लांट से यहाँ के किसानों को कोई फायदा दिखाई नहीं देता इस पावर प्लांट की बिजली दूसरे राज्यों कोदी जाने वाली हैं तो इसका यहाँ के किसानों कोई फायदा नहीं हैं। विदर्भ के किसानों की बढ़ती हुई अत्महत्याएं रोक ने हैं तो उनका आर्थिक विकास करना बहुत ही जरूरी हैं।

विकास और प्रगति के नाम पर लोगों को विस्थापित किया जाता हैं। आधुनिक औद्योगीकरण के आँधी में सिर्फ मानुषी ही नही उखड़ता। प्रभावित होता, बल्कि उसका परिवेश

और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाता हैं। हम बिना पश्चिम को मॉडल बनाए अपने शर्तों, एवं अपने मर्यादाओं के आधार पर औद्योगिक विकास का भारतीय स्वरूप निर्धारित कर सकते हैं। औद्योगीकरण के कारण जो समाज में असंतोष बढ़ रहा हैं वह असंतोष सरकार की गलत नीतियों, गलत परियोजनाओं एवं जिस क्षेत्र में जिस प्रकार के विकास की आवश्यकता हैं उस प्रकार के विकास के बजाय विनाशकारी कारी परियोजनाओं के विकास की वजह से और भी बढ़ता जा रहा हैं। इसी तरह अगर नीतिया बनाएँगे तो देश का विकास नहीं ती सिर्फ एक ही तबके का विकास होगा। और देश के किसान, आदिवासी लोग विस्थापन के शिकार होते रहेंगे और देश में असंतोष बढ़ता ही जाएगा। एवं देश का विकास कभी नहीं होगा। इसी लिए औद्योगीकरण से होने वाले विस्थापन एवं बढ़ते असंतोष की ओर सरकार को ध्यान देना जरूरी हैं।

वर्धा के मांडवा गाँव के असंतोष के प्रकार पर टिप्पणी

वर्धा जिला के मांडवा इस गाँव में 1320 मेगावाट 660×2 कृटीकल का लैन्को विदर्भ थर्मल पावर प्लांट का निर्माण कार्य चल रहा है। इस पावर प्लांट के लिए2009 में जमीन खरीदी गई थी, 2010 में पहली जनसुनवाई हुई थी, लेकिन इस जनसुनवाई किसानों को अपने मतों को रखने नहीं दिया गया था। इस पहली जनसुनवाई में किसानों, पीड़ितों तथा निवासियों ने कंपनी के खिलाफ बोलने से रोका गया एवं इस पावर प्लांट के खिलाफ बोलने पर किसानों, पीड़ितों, ग्रामीणों को कंपनी द्वारा गुंडों एवं पुलिस द्वारा बेरहमी से पीटा गया। इस जनसुनवाई मे किसानों,मजदूरों, एवं गाँव वासियों को दबाने एवं उनके मतों को दबाने का प्रयास किया गया तथा कंपनी गैर तरीकेसे पैसा एवं पावर के बल पर चलाने का काम किया गया। इस जनसुनवाई में पीड़ितों पर गाँव वासियों पर हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाकर पीड़ितों एवं गाँव वासियों ने मिलकर कंपनी के खिलाफ मुंबई हाई कोर्ट में (PIL) जनहित याचिका दर्ज की हैं। इस याचिका

मे यह भी कहा गया था कि जबतक इस पर कोर्ट का फैसला नहीं आता तबतक कंपनी का निर्माण कार्य एवं जनसुनवाइ जैसे कार्य पर रोक लगाई जाये लेकिन इस लैन्को पावर प्लांट का निर्माण कार्य चलता रहा हैं। इस याचिका के जवाब में कोर्ट द्वारा कंपनी को जनसुनवाइ फिर से लेने का आदेश दिया। इसके बाद इस कंपनी द्वारा 2012 में दूसरी जनसुनवाइ ली गई। लेकिन किसान, पीड़ित एवं गाव वासियों का इस कंपनी असंतोष और बढा इस कंपनी को यहाँ के लोग नहीं चाहते हैं।

पीड़ितों, किसानों एवं गाँव वासियों का कहना है कि, उनका विकास के लिए बिलकुल भी विरोध नहीं हैं। बल्कि उनका विरोध उस बात के लिए हैं की, सरकार अगर गाँव वासियों का विकास करना चाहती हैं तो इस पावर प्लांट के लगाने से हमारा कोई फायदा या विकास नहीं होगा। क्योंकि इस पावर प्लांट निर्माण से नुकसान हो रहा हैं हमारी जमीने जा रही हैं, हमें बेरोजगारी जैसी समस्या का सामना करना पड रहा है , इस पावर प्लांट से निकलने वालि राख़ एवं सूक्ष्म कणों का बुरा असर कंपनी के आस्पास 10 किमी तक होगा, इससे खेती पर बुरा असर एवं स्वास्थ्य पर भी असर पड़ेगा। इस कंपनी द्वारा ली गई जमीन के किसानों को सही मुआवजा भी नहीं दिया गया है और उन्हे विस्थापित एवं बेरोजगार बना रही हैं। इसलिए इस पावर प्लांट को विरोध यहाँ के लोगों का हैं।

पीड़ित लोगों का कहना हैं कि उनका विकास के लिए विरोध नहीं हैं बल्कि विकास के नाम पर हो रहे अन्याय एवं शोषण, विकास करने का जो तरीका है उसका विरोध हैं। पीड़ित भी अपना विकास चाहते हैं, उन्हे भी अपना विकास हो ऐसा लगता हैं लेकिन विकास उन चीजों का हो जिनसे उन्हे फायदा हो, यह नहीं कि विकास के नाम पर और कोई कंपनी लाकर लगाए और उससे बेरोजगारी,, बेकारी, विस्थापन करके विकास हो। उसी तरह से यह कंपनी हमें विस्थापित,

बेरोजगार, तथा बेकारी जैसी समस्या निर्माण कर रही हैं।लेकिन इस पावर प्लांट के बदले यहाँ पर 80-90% लोग खेती पर निर्भर हैं और वर्धा जिलों में कपास का उत्पादन बड़ी मात्रा में होता हैं इसलिए यहाँ पर कॉटन पार्क या कृषि से जुड़े प्रक्रिया उद्योगों का विकास हो और प्रक्रिया उद्योगों के विकास के माध्यम से हम किसानों, मजदूरों एवं गाँव वासियों का आर्थिक विकास होगा। इन प्रक्रिया उद्योगों के माध्यम से उत्पादित माल या वस्तुओं पर प्रक्रिया करके किसानों को अच्छा खासा मुआवजा मिलेगा एवं आर्थिक विकास दर मे वृद्धि होगी। जो कर्ज मे डुबे लोग है उनका प्रक्रिया उद्योगों के विकास के माध्यम से आर्थिक विकास होगा एवं विदर्भ मे जो बड़ी मात्रा मे आत्महत्याएँ हो रही हैं वो रुकेगी,अतः उनके अंधकारमय जीवन को एक नई विकास की ज्योति मिलेगी।

वर्तमान मे देखा जाये तो सरकार उन लोगों की यानि पीड़ित किसानों पर ध्यान नहीं दे रही हैं। जबकि इस पावर प्लांट के विरोध मे मुंबई हाई कोर्ट में जनहित याचिका दायरकी और उसके माध्यम से सरकार से अपील कि हैं की जब तक इस पर हाई कोर्ट कासही फैसला नही आता तब-तक इस पावर प्लांट के निर्माण कार्य एवं प्रक्रिया पर रोक लगनी चाहिए। जिला अधिकारी, पर्यावरण कंट्रोल बोर्ड इन सभी को अनेक निवेदन देने के बावजूद भी इस कंपनी का निर्माण कार्य लगातार चल रहा हैं। यह एक तरीके से लोकतान्त्रिक राज्य व्यवस्था में आम आदमी की आवाज को दबाने का काम हैं। इसलिए सरकार को इस नजरिए से सोचना चाहिए कि सरकार को एक एजेंट की तरह कार्य नहीं करना चाहिए।और जनता के साथ जनता के हक की बातों को सोचकर ही कार्य करना चाहिए। इस तरह से लैन्को पावर प्लांट से पीड़ितों एवं गाँव वासियों के मतों एवं उनके इस पावर प्लांट के बारे मे सोच का अध्ययन करने पर स्पष्ट हुआ हैं।

अनुशंसाएं-

1. **गाँव के लोगों की शिकायतों पर जल्द से जल्द कार्यवाही हो।**
2. उच्च न्यायालय के निर्णय आने तक कंपनी का काम रोका जाए।
3. मुआवजे संबंधी विवाद सुलझाएं जाएँ।
4. प्रक्रिया उद्योगों एवं कॉटन पार्क विकसित किजिये।
5. अहिंसक आंदोलान के के जरीये अपनी बात राखने के जनता के अधिकार को स्वीकार कर समस्याओं को जल्द से जल्द निपटाया जाए।
6. पावर प्लांट से होने वाले प्रदुषण को कम करने के लिए उपाययोजना होनी चाहिए।
7. कंपनी कि और से 83 आयटीआय धारक युवकों को काम पर लेने के लिए आश्वासन दिया गया था,उन 83 युवकों को 6 माहिने में काम पर लिया जाएगा ऐसा कहा गया था उन को अभी काम पर नहीं लिया गया है। उन 83 युवाकों नें प्रशिक्षण पूरा किया है। उन्हें जल्द से जल्द काम पर लिया जाए।

परिशिष्ट:-

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा,(महाराष्ट्र)

शोध प्रश्नावली

औद्योगीकरण और सामाजिक अशांति:वर्धा के पावर प्लांट के विशेष संदर्भ में

नाम ----------

गाव/शहर ----------

उम्र ----------लिंग/पुरुष/स्त्री ----------

शिक्षा ----------व्यवसाय ----------

जाति (एससी,एसटी,ओबीसी,जनरल)----------

1. क्या आप के पास खेतिहर जमीन हैं? हाँ / नहीं
2. यदि जमीन हैं तो सिंचित या असिंचित किस प्रकार की हैं? सिंचित/असिंचित
3. क्या आप खेतिहर मजदूर हैं? हाँ / नहीं
4. क्या आपकी जमीन पावर प्लांट में गई हैं? हाँ / नहीं
5. क्या जमीन अधिग्रहण मुआवजे के जरिए भरपाई की गई हैं? हाँ/नहीं
6. आप को मुआवजेकि दर पता हैं? हाँ/नहीं

7. आप पावर प्लांट के बारे मे क्या राय रखते हैं?----------

---

8. क्या आपको लगता हैं कि इस पावर प्लांट से आप को फायदा हैं? हाँ/नहीं
9. इस पावर प्लांट मे आप के परिवार का कोई सदस्य नौकरी कर रहा हैं? हाँ/नहीं

10.क्या नौकरी स्थायी हैं या अस्थायी हैं? हाँ/नहीं

11.क्या आपकी जमीन इस पावर प्लांट में जाने के बाद बेरोजगारी जैसी समस्या निर्माण हुई हैं? हाँ/नहीं

12.क्या आप को रोजगार के लिए दूसरे गाव जाना पड़ता हैं? हाँ/नहीं

13. क्या कंपनी की ओर से कोई पुनर्वास की कोई व्यवस्था की गई हैं? हाँ/नहीं

14.क्या आप जमीन आधिग्रहण से खुश हैं? हाँ/नहीं

15. जन सुनवाई में क्या आप ने भाग लिया था? हाँ/नहीं

16. क्या जन सुनवाई से आप सहमत हैं? हाँ/नहीं

17. क्या आप ऐसे आंदोलन में भागीदार हैं जो जमीन अधिग्रहण पीड़ितों के लिए कार्य करते हैं? हाँ/नहीं

18. क्या इस पावर प्लांट कंपनी से प्रदूषण निर्माण हो रहा हैं? हाँ/नहीं

19. इस कंपनी से निर्माण प्रदूषण को रोकने के लिए कंपनी कोई उपाय योजना की हैं? हाँ/नहीं

20. कंपनीसे निकलने वाले दूषित पानी की व्यवस्था सही हैं? हाँ/नही

21. क्या कंपनी से निकालने वाले राख की व्यवस्था ठीक की हैं? हाँ/नही

22. कंपनी से निर्मित पावर सप्लायर केबल का आप के खेती पर प्रभाव पड रहा हैं? हाँ/नही

२3.क्या आप प्रक्रिया उद्योगों का विकास चाहते हैं? हाँ/नही

24.प्रक्रिया उद्योगों से आप को क्या लाभ होगा?----------

---

25. क्या आप को लगता हैं की प्रक्रिया उद्योगों से किसान और मजदूरों का विकास होगा? हाँ/नही

26. पावर प्लांट से किसानों और मजदूरों का विस्थापन हुआ हैं? हाँ/नहीं

27. इस पावर प्लांट से जो असंतोष फैला हैं उसके लिए कौन जिम्मेदार हैं? राज्य सरकार,केंद्र सरकार,कंपनी

सन्दर्भ ग्रंथ-सुची

1. कुमार शरद,(2008)भारतीय समाज.लखनऊ:भारत बुक सेंटर.

2.सिंह,शिवबहाल,(2010)विकास का समाजशास्त्र.जयपुर:रावत पब्लिकेशन्स.

3.बघेल, डॉ.डीएस,(2015)औद्योगिक समाजशास्त्र.दिल्ली:विवेक प्रकाशन.

4. मदन,जी आर,(2007)विकास का समाजशास्त्र.दिल्ली;विवेक प्रकाशन.

5.शाह, घनश्याम,(2009)भारत में सामाजिक आन्दोलन.जयपुर:रावत पब्लिकेशन्स.

6.सिंह वी एन,एवं सिंह जनमेंजय,(2005) समकालीन भारतीय समाज.जयपुर:रावत पब्लिकेशन्स.

7.हसनैन,नदीम,(2007) समकालीन भारतीय समाज –एक समाजशास्त्रीय परिदृश्य. लखनऊ: भारत बुक सेंटर.

8.हसनैन नदीम,(2005)जनजातिय भारत.नई दिल्ली:जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्री ब्यूटर्स.

9.विल्लियम रेमंड,(1976).keywods.landon:palgeave.

पत्रिकाएं

1.चौबे,प्रभाकर,2014,देशबंधु(http://www.deshbandhu.co.in/article/4554/10/330#.VkEYGLcrLak)

2.लोकराज्य,मराठी मासिक पत्रिका,माहिती आणि जनसंपर्क महासंचालानालय महाराष्ट्र सरकार द्वारा प्रकाशित

3.अंतिम जन,सितम्बर 2014,गांधी स्मृति एवं दर्शन समितिनई दिल्ली

4.वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद,हिंदी मासिक पत्रिका जुलाई 2015,सी एस आई आर द्वारा प्रकाशित

समाचार पत्र

1.लोकमत समाचार,24 अक्तूबर2014

2.दैनिक भास्कर,26अगस्त 2012

3.दैनिक भास्कर,२८अगस्त 2012

4. दैनिक भास्कर,23अगस्त 2012,(नरेश पाल गंगवार-लेखक राजस्थान के ऊर्जा सचिव)

5.लोकमत समाचार,21अक्तूबर 2013

6.इंडिया टुडे,26 अगस्त 2015,स्वतंत्रता दिवस विशेष-अरुण घोष

इंटरनेट सामाग्री

1. http://www.calternatives.org/resource/pdf/Development%20Induced%20Displacement%20in%20India.pdf
2. http://www.forcedmigration.org/research-resources/expert-guides/development-induced-displacement-and-resettlement/fmo022.pdf
3. http://www.dianuke.org/nuclear-power-projects-displacement/
4. http://www.downtoearth.org.in/news/kovvada-nuclear-power-plant-will-displace-about-8000-people-39514
5. http://www.indiaenvironmentportal.org.in/content/420938/order-of-the-national-green-tribunal-regarding-rehabilitation-and-resettlement-rr-work-related-to-maheshwar-dam-madhya-pradesh-28102015/
6. http://wardha.nic.in/
7. http://wardha.gov.in/
8. http://www.sourcewatch.org/index.php/Maharashtra_and_coal
9. https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A4%B6%E0%A5%80%E0%A4%B2_%E0%A4%A6%E0%A5%87%E0%A4%B6
10. http://hindi.webdunia.com/article/current-affairs/%E0%A4%86%E0%A4%87%E0%A4%8F-

%E0%A4%9C%E0%A4%BE%E0%A4%A8-
%E0%A4%B2%E0%A5%87%E0%A4%82-
%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B8-
%E0%A4%95%E0%A5%80-%E0%A4%B8%E0%A4%B9%E0%A5%80-
%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E
0%A4%B7%E0%A4%BE-114041900086_1.htm

11. https://books.google.co.in/books?id=B0rhZwEACAAJ

12. info@aarthiconsultants।com)।

13. (lancogroup.com/DynTestform.aspx?pageid=23

14. http://timesofindia.indiatimes.com/city.nagpur/lanco-and-wardha

farmers- fight.in-HC-again/Articleshow/17962585.com

15.A film by pradeep indulkar-film – haigh power

16. http://hindi.indiawaterportal.org/node/46090

17. http://hindi.indiawaterportal.org/node/47813

18.
http://www.im4change.org.previewdns.com/hindi/%E0%A4%9A%E0%A4%B0
%E0%A5%8D%E0%A4%9A%E0%A4%BE-
%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82-
/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%A5%E0
%A4%BE%E0%A4%AA%E0%A4%A8-%E0%A4%95%E0%A5%87-
%E0%A4%B8%E0%A4%AC%E0%A4%B8%E0%A5%87-
%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%A6%E0

%A4%BE-
%E0%A4%B6%E0%A4%BF%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B0-
%E0%A4%B9%E0%A5%88%E0%A4%82-
%E0%A4%86%E0%A4%A6%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A5%80-
%E0%A4%AE%E0%A4%82%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B2%E0%A4%AF-%E0%A4%95%E0%A5%80-
%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AA%E0%A5%8B%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%9F-7961.html

वर्धा लैन्को पावर प्लांट के जनसुनवाइ के विडियो संदर्भ:

1. https://www.youtube.com/watch?v=1TiUJ_2zXNw
2. https://www.youtube.com/watch?v=qE-mxdAOt3c
3. https://www.youtube.com/watch?v=8N1mmZKwi3s
4. https://www.youtube.com/watch?v=0ADHFJ65zSw
5. https://www.youtube.com/watch?v=A9vHOvR6330
6. https://www.youtube.com/watch?v=F5Y-eLU2rew
7. https://www.youtube.com/watch?v=_T-JPC3-S-o
8. https://www.youtube.com/watch?v=Y-WDaFCBLQk
9. https://www.youtube.com/watch?v=FKxRH0oFIgY

10. https://www.youtube.com/watch?v=G4FZ4nTIFZ4

11. https://www.youtube.com/watch?v=OchiBafZxNg

12. https://www.youtube.com/watch?v=G4VCCzeie3s

13. https://www.youtube.com/watch?v=JNkuhmeLyuM

14. https://www.youtube.com/watch?v=AMaVuYv3FQk

15. https://www.youtube.com/watch?v=MVo_GEEOjxo

16. https://www.youtube.com/watch?v=oL1cMPO-sPE

17. https://www.youtube.com/watch?v=av1a_tPHOvQ

18. https://www.youtube.com/watch?v=fDTVR_ahtfM

19. https://www.youtube.com/watch?v=OnB5vTs8rjo

20. https://www.youtube.com/watch?v=LYuoX5g9Sm8

21. https://www.youtube.com/watch?v=gg0OcMhIjhw

22. https://www.youtube.com/watch?v=_VqgNWtDx3A

23. https://www.youtube.com/watch?v=WKRxnrhFwOg

24. https://www.youtube.com/watch?v=2H5ei7qwcJk

25. https://www.youtube.com/watch?v=dwwfPIOFnLU

26. https://www.youtube.com/watch?v=wMYRWXzYpbQ

27. https://www.youtube.com/watch?v=8LIgDhXggak

28. https://www.youtube.com/watch?v=DU4RafDuDHA

29. https://www.youtube.com/watch?v=97MmNM0M8jc